इकाई 1 : प्रकृति व पर्यावरण

पाठ 1.1 : चंद्रगहना से लौटती बेर

पाठ 1.2 : नर्मदा का उद्‌गम : अमरकंटक

पाठ 1.3 : बादल को घिरते देखा है

इकाई

1 प्रकृति व पर्यावरण

आपने पाठ्यपुस्तक में 'प्रकृति व पर्यावरण' की इकाई का अध्ययन किया था। इस इकाई में कोशिश की गई थी कि हम पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में सोचना शुरू करें और उस क्षेत्र में अपनी भूमिका भी सुनिश्चित करें। इस वर्ष 'प्रकृति व पर्यावरण' में सम्मिलित अध्यायों का प्रमुख उद्देश्य प्रकृति के सौन्दर्य की सराहना व सौन्दर्य बोध विकसित करना है।

चंद्रगहना से लौटती बेर कविता में कवि ने चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय खेतों में चना, सरसों व अलसी की लहलहाती फसल व आस–पास की प्राकृतिक सुंदरता पर मुग्ध होकर उसका वर्णन किया है। इस वर्णन की खासियत यह है कि इसमें प्राकृतिक दृश्य का मानवीकरण हुआ है। जन साधारण के जीवन की गहरी और व्यापक संवेदना उनकी कविताओं में मुखरित हुआ है। मिट्टी की सुगंध व मिट्टी के प्रति अस्था के स्वर कविता में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं।

नर्मदा का उद्गम : अमरकण्टक हमें छत्तीसगढ़–मध्य प्रदेश के सीमावर्ती इलाके में फैले सतपुड़ा–विन्ध्य के पर्वत प्रदेश में ले जाता है। लेख में नर्मदा के उद्गम क्षेत्र व उससे जुड़ी दन्त कथा को बड़ी खूबसूरती के साथ सहज भाषा में पिरोया गया है।

प्रकृति के प्रति नागार्जुन के हृदय में विशेष आकर्षण विद्यमान था। **बादल को घिरते देखा है** कविता में उन्होंने प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है। बादल का घिरना, प्रवासी पक्षियों का आगमन, कीड़े–मकोड़े चुगते हंस आदि के माध्यम से प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण इस कविता में हुआ है।

पाठ – 1.1

DV6C7U

चन्द्रगहना से लौटती बेर

केदारनाथ अग्रवाल

जीवन परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के कमासिन गाँव में सन् 1911 में हुआ। पेशे से वकील रहे केदारनाथ का तत्कालीन साहित्यिक आंदोलनों से गहरा जुड़ाव रहा। ये प्रगतिवादी धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। जनसामान्य का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य उनकी कविताओं का मुख्य विषय रहा है। ***नींद के बादल, युग की गंगा, फूल नहीं रंग बोलते हैं, पंख और पतवार*** *तथा* ***कहे केदार खरी–खरी*** *आदि उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ है। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।*

देख आया चंद्रगहना!
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिंगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली,
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही हैं, जो छुए यह,
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो –
हो गयी सब से सयानी,

हाथ पीले कर लिये हैं,
ब्याह–मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन,
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं: स्वयंवर हो रहा है,
प्रकृति का अनुराग – अंचल हिल रहा है
इस विजन में,
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।
और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खम्भा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी,
प्यास जाने कब बुझेगी!
चुप खड़ा बगुला डुबाए टांग जल में,
देखते ही मीन चंचल
ध्यान–निद्रा त्यागता है,
चट दबाकर चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथे वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबा कर
दूर उड़ती है गगन में!
औ यहीं से –
भूमि ऊँची है जहाँ से –
रेल की पटरी गई है।
ट्रेन का टाइम नहीं है।

मैं यहाँ स्वच्छन्द हूँ,
जाना नहीं है।
चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर–उधर रींवा के पेड़
काँटेदार कुरूप खड़े हैं।
सुन पड़ता है
मीठा–मीठा रस टपकाता
सुग्गे का स्वर
टें टें टें टें;
सुन पड़ता है
वनस्थली का हृदय चीरता,
उठता–गिरता,
सारस का स्वर
टिरटों–टिरटों;
मन होता है –
उड़ जाऊँ मैं
पर फैलाए सारस के संग
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है
हरे खेत में,
सच्ची प्रेम–कहानी सुन लूँ
चुप्पे–चुप्पे।

शब्दार्थ

बीते के बराबर – एक बलिश्त का नाप (लगभग 22.5 से.मी.); **मुरैठा** – पगड़ी; **अनुराग** – स्नेह, प्रेम; **विजन** – निर्जन; **अनगढ़** – प्राकृतिक; **चंद्रगहना** – एक गाँव का नाम; **अलसी** – एक तिलहन का पौधा; **फाग** – होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत; **चकमकाता** – चौंधियाता, चकाचौंध पैदा करता; **चटुल** – चतुर, चालाक; **जुगुल** – युगल, दो; **रींवा** – एक पेड़ जो बबूल के जैसा होता है; **हठीली** – जिद्दी।

अभ्यास

पाठ से

1. अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए?
2. विजन किसी व्यापारिक नगर से क्यों श्रेष्ठ है?
3. काले माथेवाली चिड़िया किस तरह से मछली पकड़ती है?
4. ''बाँधे मुरैठा शीश पर'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
5. ''देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है, प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है।'' इन पंक्तियों में प्रकृति के किस दृश्य की ओर संकेत किया गया है।
6. प्रेम की प्रिय भूमि को अधिक उपजाऊ क्यों बताया गया है?
7. निम्नांकित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए–

   (क) एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा
   आँख को है चकमकाता।

   (ख) सुन पड़ता है
   वनस्थली का हृदय चीरता
   उठता–गिरता
   सारस का स्वर।

पाठ से आगे

1. अपने आस–पास के किसी प्राकृतिक स्थल का वर्णन कीजिए, जिसके दृश्य आपको इस पाठ को पढ़ते समय याद आ जाते हैं।
2. एक कोलाहल भरे, घनी आबादी वाले नगर तथा शांत ग्रामीण अंचल की तुलना कीजिए और बताइए कि दोनों में कौन–कौन सी बातें आपको पसंद हैं और कौन–कौन सी नापसंद। अपनी पसंदगी और नापसंदगी का कारण भी लिखते हुए इसे एक तालिका के माध्यम से दर्शाइए।
3. 'बगुला' समाज के किस वर्ग का प्रतीक है और उनकी किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? आज के समाज में यह उदाहरण कितना प्रासंगिक है?

DVF89H

भाषा के बारे में

1. प्रकृति का अनुराग–अंचल हिल रहा है, जो मानवीकरण का उदाहरण है। **मानवीकरण अंलकार**– जहाँ जड़ वस्तुओं या प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं का आरोप किये जाते हैं। वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। पाठ से मानवीकरण अलंकार के ऐसे ही अन्य उदाहरण लिखिए।

DVP4B5

2. पाठ में 'हरा ठिगना चना', 'हठीली अलसी', 'चतुर चिड़िया' आदि विशेषणयुक्त शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार आप अपने आस–पास के कुछ पौधों, पक्षियों, फलों या जीव–जन्तुओं को किस तरह के विशेषणों के साथ प्रस्तुत करना चाहेंगे। ऐसे दस उदाहरण दीजिए।

प्रायोजना कार्य

1. प्रकृति के सुंदर चित्रण की अन्य कविताओं का संकलन कर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

DVXZCS

2. किसी प्राकृतिक स्थल के भ्रमण को याद करते हुए एक लेख तैयार कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।
3. कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित कविता को पढ़ें और सुबह के जो दृश्य आपके मन में आए, उनके चित्र बनाएँ।

उषा

प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा–से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

पाठ – 1.2

नर्मदा का उद्गम : अमरकंटक

डॉ. श्रीराम परिहार

जीवन परिचय

डॉ. श्रीराम परिहार का जन्म मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले के फेफरिया गाँव में सन् 1952 में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में आपने पी.एच.डी. एवं डी. लिट की उपाधि प्राप्त की है। सम्प्रति– प्राचार्य, माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, खण्डवा में कार्यरत हैं। राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्राब्दी सम्मान, सारस्वत सम्मान, हिमालय कला एवं साहित्य इत्यादि अनेक सम्मान से आपको सम्मानित किया गया है।

मुख्य कृतियाँ – 'आँच अलाव की', 'अँधेरे में उम्मीद', 'धूप का अवसाद', 'बजे तो वंशी, गूँजे तो शंख', 'ठिठके पल पंखुड़ी','रसवंती बोलो तो, 'झरते फूल हरसिंगार के', हंसा कहो पुरातन बात', 'बोली का इतिहास', 'भय के बीच भरोसा', 'चौकस रहना है'; 'कहे जग सिंगा; 'रचनात्मकता और उत्तरपरंपरा; 'संस्कृति सलिला नर्मदा'; 'निमाड़ी साहित्य का इतिहास, 'परम्परा का पुराख्यान'।

मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी के आमंत्रण पर इस बार अमरकंटक की सारस्वत यात्रा का सुयोग्य बना। अमरकंटक तो पहले भी जाना हुआ था, पर इस बार ''आषाढ़स्य प्रथम दिवसे'' के पूर्व दो दिन का आयोजन यहाँ था। आकाश में मेघ घिर–घिर कर झर रहे थे। प्रकृति नहा रही थी। वनस्पति की आँखों में सपने जाग रहे थे। आम्रवनों की कोकिल का स्वर उस वर्षा में गीला हो रहा था। वह स्वर जड़–चेतन में नेह–छोह की बूँद–बूँद भर रहा था। इन बूँदों के उत्सव में रस–रस अमरकंटक को देखना निसर्ग निहित चैतन्य से साक्षात्कार करना है। प्रकृति के उत्सव में स्वयं को उल्लास की फुहार बना देना है। पृथ्वी के महामंच पर अपने व्यक्तित्त्व की लघुत्तम इकाई के अर्थ खोजना है।

हम लोग सुबह–सुबह पेण्ड्रारोड पहुँचे। मेरे मित्र उदयपुर विश्वविद्यालय के प्राकृत विभाग के विद्वान प्राध्यापक भी इत्तफाक से यहाँ मिल गये जो इसी आयोजन में शामिल होने जा रहे थे। पानी बरस रहा था। हम पेण्ड्रारोड़ से अमरकंटक के लिए रवाना होते हैं। पेण्ड्रारोड से अमरकंटक का रास्ता सघन वन प्रान्त से होकर जाता

है। आरण्यक संसार में बरसते पानी में गुजरना अच्छा लग रहा था। बादल, सरई के ऊँचे–ऊँचे पेड़ों की फुनगियों पर रूकते, बात करते, बतरस से अरण्यावली को आर्द्र करते और आगे बढ़ जाते हैं। अमरकंटक पहाड़ का शिखर बहुत दूर से दिखायी देने लगता है। विंध्य और सतपुड़ा का यह समवेत विग्रह बड़ा सुदर्शन और मनोहारी है। इसे मेकल कहते है। मेकल पर्वत की ही दाईं भुजा विंध्याचल और बाईं सतपुड़ा है। इन दोनों पर्वतों के बीच नर्मदा निनादित और प्रवाहित है। विंध्य और सतपुड़ा से बनी अँजुरी में नर्मदा का जल लहर–लहर है। इस पर्वत का मस्तक पूर्व तक फैला है। यह अपनी विराटता से सम्पूर्ण भारत को पूर्व से पश्चिम तक हरापन और प्राकृतिकता दिये हुए है।

दूर से दृष्टि पड़ती है कि कोई रजत–धार आकाश से झर रही है। चारों तरफ हरा–भरा वानस्पतिक संसार है। एक पर्वत अपनी अचलता और विश्वास में समृद्ध है। ऊपर आसमान में बादलों की छियाछितौली और धमाचौकड़ी मची है। बादल असमान ही बरस रहा है। और एक मोटी जलधार ऊपर से नीचे गिरते दिखायी दे तो लगता है धरती की प्रार्थनाएँ फलवती होने लगी हैं। यह धारा सोन की है। यह अमरकंटक का पूर्वी भाग है जो पेण्ड्रारोड से आते समय दिखायी देता है। शहडोल या जबलपुर–डिण्डोरी मार्ग से अमरकंटक पहुँचने पर हमें इसके पश्चिम भाग के प्राकृतिक संसार को देखने का सुख मिलता है। सोन नद है। सोनमुड़ा से निकलकर यह पूर्व में चला जाता है। गंगा की सभी सहायक नदियों से आगे जाकर यह गंगा में मिलता है। सोन के जल के द्वारा अमरकंटक अपनी जलांजलि सूर्य को और पूर्व के समुद्र को देता है। नर्मदा के जल–प्रवाह के माध्यम से यह अपनी आदरांजलि पश्चिम के समुद्र को देता है। दोनों ही दशा में और दिशा में इसके आसपास की जमीन नम होती है। यह जमीन का गीलापन कई–कई जीवन की धड़कनों को पानी के रंग दे रहा है।

कितनी ही आड़ी–तिरछी सड़क से चलते हुए अमरकंटक पहुँचे। सोन की यह झार इस मार्ग के हर कोण से दिखायी देती है। आँख सरई के पेड़ों की गाढ़ी हरियाली पर अटकती है। वन की सघनता पर आश्वस्त होती है। फिर सोन के सम्मोहन में फँस जाती है। लम्बा घाट चढ़ने पर हम अचानक स्वयं को अमरकंटक के एकदम सान्निध्य में पाते हैं। सोन आँखों से ओझल हो जाता है। बारिश रूक गयी है। अमरकंटक की समतल और रक्ताभ छवि से रूबरू होते आगे बढ़ते हैं। छोटी सी, बिल्कुल छोटी नदी को पतली धार के रूप में छोटे–से पुल द्वारा पार करते हैं। निगाह किनारे लगे बोर्ड पर अटक जाती है– लिखा है ''नर्मदा''। इतनी छोटी, इतनी पतली! यहाँ बहते हुए इसलिए दिख रही है कि बरसात का मौसम है। अमरकंटक का दूसरा ही रूप सामने आता है। कुछ मकान हैं। मंदिर हैं। संतों के आश्रम हैं। कार्यालय हैं। निर्माणधीन जैन मंदिर है। जन–जीवन है। वनवासियों का निर्द्वन्द्व जीवन है। टोकनियों में जामुन लेकर वनवासी महिलाएँ बैठी हैं। पके आम के ढेर–के–ढेर हैं। एक अजब शांति है। कुछ मिठाई की, चाय की दुकानें हैं। नारियल, प्रसाद, माला, कंठी की कई दुकानें हैं। लोग गरीब हैं। नर्मदा उन्हें संभाले हुए है। अमर के कण्ठ से निकसती जलधार के किनारे भयानक समय में बेखबर होकर जी रहे हैं।

बस स्टैण्ड से पूर्व में दुकानों की गली से चलते हुए आगे जाने पर एक जल कुण्ड है। यह नर्मदा का उद्गम स्थल है। कुण्ड ग्यारह कोणीय है। स्वच्छ और शीतल जल लहरा रहा है। कुण्ड के चारों ओर आसपास 20 मंदिर बने हुए हैं। कुण्ड पक्का बना है। कुण्ड विशाल है। कुण्ड के चारों ओर पक्की समतल जगह बना दी गयी है। मुख्य द्वार भी विशाल है। कुण्ड के आसपास बने मंदिर मंझौले आकार के हैं। कुण्ड के पूर्व की तरफ एक छोटा सा मंदिर है जिसमें शिव प्रतिष्ठित हैं। अमरेश्वर के कण्ठ से ही नर्मदा निकली है। यह कुण्ड ही नर्मदा का आदिम स्रोत है। जल शिव के कण्ठ से निकलकर कुण्ड में एकत्रित होता रहता है। कुण्ड के बाद नर्मदा भूमिगत होकर 5–6 किलोमीटर दूर पश्चिम में कपिलधारा के पास प्रकट होती है। नर्मदा कुण्ड में डुबकी लगाकर तन–मन का ताप शमन करने का पुण्य लिया जा सकता है। मंदिरों में पूजन–अर्चन, आरती–वंदन वैसा ही है, जैसा प्रायः नर्मदा तट के अन्य मंदिरों में होता है। नर्मदा कुण्ड का जल और उसका सुखदायी स्वरूप इस स्थान को एक महानदी की नैसर्गिक और दिव्य जन्म स्थली होने का गौरव देता है। यहाँ से रेवा आसमुद्र पश्चिम की ओर बहती चली जाती है।

रेवा मन में शोण के विरह का ताप लिये हुए पश्चिम की ओर बह निकलती है। उसकी गति में ताप है और स्वभाव में शीतलता है। एक लोक कथा है– शोण और नर्मदा की प्रणय कथा। जुहिला नामक नर्मदा की सखी ने सब गड़बड़ कर दिया। नर्मदा जुहिला को दूति बनाकर अपना प्रणय संदेश शोणभद्र के पास भेजती है। जुहिला शोण के व्यक्तित्व पर मुग्ध हो जाती है। वह नर्मदा का रूप लेकर सोन का वरण कर लेती है। यह बात नर्मदा को पता चलती है तो वह मारे क्रोध के उल्टे पाँव लौटकर पश्चिम की ओर वेगवती होकर चल पड़ती है। चट्टानों को तोड़ती, पहाड़ों को किनारे करती, उछलती, उत्ताल तरंगों से रव करती वह बहती ही चली जाती है। पीछे मुड़कर फिर नहीं देखती। उधर सोन (शोण) को इस रहस्य का पता चलता है तो वह भी विरह संतप्त होकर अमरकंटक के उच्च शिखर से छलांग लगा लेता है। पूर्व की ओर विरह–विधुर मन लिये बह निकलता है। बहता ही चला जाता है। कुछ दूर जाकर जुहिला उसे मना लेती है। उसमें मिल जाती है। उसमें समा जाती है। लेकिन नर्मदा और सोन दो प्रेमी दो विपरीत दिशाओं में बह निकलते हैं। धरती की करूणा विगलित होकर नर्मदा और सोन के स्वरूप में अजस्र बह रही है।

माई की बगिया सोन और नर्मदा की बाल–सुलभ क्रीड़ाओं की भूमि रही है। वह ऋषि मार्कण्डेय की तपोभूमि भी रही है। आम्र तथा सरई के पेड़ों के आँगन में यह बगीचा हैं। गुलबकावली के फूलों में यहाँ नर्मदा और सोन का प्रेम अभी भी खिला हुआ है। माई की बगिया में छोटा–सा जलकुण्ड है। गुलबकावली का क्षेत्र भी बहुत थोड़ा रह गया है। एक साधु यहाँ कुटिया में रहते हैं। तीर्थ यात्रियों की आँखों में गुलबकावली का अर्क डालकर आँखों की उमस दूर करते हैं। दृष्टि का धुंधलका छाँटते हैं। लगता है नर्मदा और सोन का प्रणय

गुलबकावली के फूलों के माध्यम से जगत की दृष्टि की तपन अभी तक हर रहा है। जीवन का ताप तो दोनों अपने–अपने जल से शमित कर ही रहे हैं। धरती के सूखे किनारों को हँसी बाँट रहे हैं। उत्सव लुटा रहे हैं। जुहिला के मन की खोट और सोन से उसका विवाह होने की खबर लगते ही नर्मदा माई की बगिया में भूमिगत होकर पश्चिम दिशा में जाकर दो–तीन किलोमीटर बाद सतह पर आती है। कपिल धारा के पास जल का सोता दिखायी देता है।

यह प्रसंग मानवीय संदर्भ लिये हुए है। लोक ने नदियों को कहीं मानवीय और कहीं दैवी गुणों से मंडित किया है। यह लोक की मानवीय दृष्टि और व्यवहार के प्रकृति तक फैलाव का सुफल है। परन्तु तटस्थ रूप से देखने पर भी अनुमान लगाया जा सकता है कि माई की बगिया से पुरातन समय में जलस्रोत बहता रहा होगा। वह जल धारा ही वर्तमान नर्मदा कुण्ड तक आती होगी। और फिर पश्चिम दिशा में आगे बढ़कर बहती चली गयी होगी। समय के परिवर्तन और अमरकंटक की वानस्पतिक सम्पदा विरल होने से इस स्रोत में भी अन्तर आया। माई की बगिया से लेकर नर्मदा कुण्ड तक की धारा सूख गयी। नर्मदा कुण्ड से आगे दो तीन किलोमीटर तक भी यही स्थिति रही होगी। नर्मदा कुण्ड से अमरकंटक का एक शिखर और आसपास की भूमि ऊँची है। उसी का जल निरन्तर नर्मदा कुण्ड में आता है। अमरकंटक ने अपनी आत्मा से नर्मदा को जन्म दिया है और उसके प्राणों के रस से नर्मदा में अनादि काल से, प्रलयकाल से जल–जीवन निःसृत हो रहा है। अमरकण्टक ने नर्मदा को जन्म देकर भारत को वरदान दिया है। यह अमरेश्वर शिव की अमरकण्टक के माध्यम से धरती को मिली कृपा है। शिव–कन्या नर्मदा जल के रूप में अमृत धार हैं।

सोनमुड़ा सोन का उद्गम है। यहाँ भी एक छोटा–सा पक्का कुण्ड बना दिया है। पहले नहीं था। कुण्ड से पतली जल–धारा निकलकर बह रही है और पर्वत के ऊपर से बहकर आती हुई मोटी जल–धार में मिलकर सोन को नद का स्वरूप देती है। थोड़ी दूर जाकर सैकड़ों फीट नीचे गिरकर वृक्षों में अदृश्य–सी हो जाती है। यह सोन पर पहला प्रपात है। यही प्रपात दूर–दूर से दिखायी देता है। सोनमुड़ा के कुण्ड में श्रद्धालुजनों द्वारा डाले गये सिक्के पड़े हैं। सोन अमरकण्टक का गर्व है।

इसी तरह नर्मदा के उद्गम स्थल पर बना जल–कुण्ड भी बहुत पहले पक्का नहीं था। अपने गाँव में बड़े–बूढ़ों से और परिक्रमावासियों से सुना है कि अमरकण्टक में माई रेवा बाँस के भिड़े में से निकली हैं। बड़ा हुआ, यहाँ आया तो ऐसा कुछ नहीं। बाँस के भिड़े से निकलने वाली बात अभी भी जिज्ञासा बनी है। लगता है यहाँ तब आमदरफ्त नहीं रही होगी। प्रकृति अपने निसर्ग पर बार–बार निहाल होकर गर्व करती रही होगी। सीमेण्ट और कंकरीट से नदियों के उद्गमों की घेरा बन्दी शुरू नहीं हुई होगी, तब बहुत पहले बाँस के भिड़े यहाँ रहे होंगे। उनमें से नर्मदा का जलस्रोत निकलता रहा होगा। बाँस के भिड़ों का साफ करके कुण्ड का निर्माण हुआ हो या प्राकृतिक स्थितियों के बदलने और बाँस वनों के कटने से बाँस का भिड़ा समाप्त हो गया हो। जो भी हो अमरकण्टक के घर जन्म लेकर नर्मदा ने सृष्टि को सोहर गाने का अवसर जरूर दिया है। नर्मदा जीवन उत्स का चरम और अमर फल है।

नर्मदा कुण्ड से लगभग 6 किलोमीटर दूर कपिल ऋषि की तपस्या भूमि है। नर्मदा यहाँ लगभग 150 फीट ऊपर से गिरती है। यह नर्मदा पर पहला प्रपात है। कितनी अद्भुत बात है कि अमरकण्टक के पूर्व और पश्चिम में सोन तथा नर्मदा दोनों ही हैं। कपिल धारा से आगे नर्मदा पत्थरों पर बिछलती हुई आगे बढ़ती है। थोड़ी दूर पर ही दूध धारा है। यहाँ पर नर्मदा अनेक धाराओं में बँटकर पत्थरों पर से बहती है। ऊपर से नीचे की ओर तेज

बहती है। उसके कारण पानी दुधिया हो जाता है। यहाँ से ही नर्मदा का जल खम्भात की खाड़ी तक दूध ही माना जाता है। जनमानस नर्मदा को माँ मानता है और उसके पानी को दूध की तरह पीकर ही पोषित और जीवित है। दूध धारा के बाद निर्जन और सघन वनप्रान्त से नर्मदा की यात्रा आरम्भ होती है।

कपिल धारा के पास ऊपर बैठी जामुन बेचती वनवासी स्त्री से मैं पूछता हूँ कि अभी तो वर्षा का मौसम है, इसलिए यहाँ नर्मदा में पानी है। प्रपात में पानी गिर रहा है। क्या गर्मी में यहाँ नर्मदा सूख जाती हैं? उस स्त्री का सहज उत्तर था – 'नर्मदा कैसे सूख सकती है बाबू। नर्मदा सूख जायेगी तो हम लोग कैसे बच सकेंगे? नर्मदा सूख जायेगी, तो संस्कृति सूख जायेगी। धरती का रस सूख जायेगा। प्रकृति का स्वाभिमान खतम हो जायेगा। नर्मदा अनवरत और अविराम प्रवाहमान है, इसलिए संस्कृति जीवित है। मनुष्य गतिमय है। लेकिन कपिल धारा के पास के आकाश मार्ग से तार पर लटक–लटक कर ट्रालियों में अमरकण्टक से खनिज (एल्यूमीनियम) बाल्को को जा रहा है। अमरकण्टक को खोखला किया जा रहा है। नर्मदा और सोन के उद्‌गम पर यह अविवेकपूर्ण और अंधा प्रहार है।

अमरकण्ठी नर्मदा का यह क्षेत्र देवों और मनुजों, मिथकों और लोककथाओं, ऋषियों और वर्तमान के रचनाकारों को अपने सन्दर्भों में समाये हुए है। कालिदास ने इसे आम्रकूट कहा है। किसी समय में यह समूचा पर्वत आम्र तरूओं से आच्छादित रहा होगा। इस समय तो आम के पेड़ यहाँ विरले ही हैं। सोनमुड़ा और माई की बगिया के पास कुछ घने आम के वृक्ष अवश्य बचे हैं। पर यह अवश्य है कि यहाँ के जंगलों में आम आज भी जंगल–जंगल पाये जाते हैं। यह क्रम पूर्वोत्तर में सरगुजा जिले के वनों तक और पश्चिम में सतपुड़ा की रानी पचमढ़ी तक चला आया है। बादलों का जो रूप अमरकंटक में देखा, वह अद्‌भुत था। वर्षा सुबह से ही थम गयी थी। चार बजे के आसपास देखते–देखते अँधेरा सा छा गया । एकदम घना–घना धुँआ–धुँआ सा तैरने लगा है। नरम और आर्द्र रूपहले बादलों की चादर ने समूचे वन, पर्वत और सबको ढँक लिया। बादल हमारे पास आ गये हैं। बिस्तर पर, कमरे में, सब जगह फैल गये हैं। एक स्पर्शित अनुभव सम्पन्न किन्तु पकड़ में न आने वाली अनुभूति का तैरता संसार हमारे आसपास था। हम कमरों में, दालानों में होते हुए भी बादलों के समन्दर में तैरते हुए धरती पर चल रहे थे। जीवन में ऐसा पारदर्शी और रोमिल बादल–अनुभव पहली बार हुआ। घनश्याम हमारे पास थे। लेकिन पकड़ से बाहर थे। घनश्याम कहाँ, कब, किसकी पकड़ में सहज आ पाये हैं ? सुबह होते ही मौसम साफ था। अमरकंटक स्नान कर निसर्ग की अभ्यर्थना में निरत–सा खड़ा था। उसकी अँजुरी का जल नर्मदा बनकर बह रहा है।

शब्दार्थ

प्रपात – झरना; **निसर्ग** – प्रकृति/स्वरूप **चैतन्य** – सक्रियता; **निनादित** – आवाज़ करती हुई; **रक्ताभ** – लाल कण वाली; **निर्द्वन्द्व** – मुश्किल रहित; **सन्तप्त** – दुःखी; **अजस्र** – अनवरत/निरन्तर; **निःसृत** – उत्पन्न होना; **आमदरफ्त** – आना–जाना; **बाँस का भिड़ा** – बाँस का झाड़ी समूह; **रोमिल** – रोएँदार; **अभ्यर्थना** – निवेदन करना।

अभ्यास

पाठ से

1. विंध्य और सतपुड़ा को लेखक ने किस रूप में चित्रित किया है?
2. वनवासियों का जीवन कैसा होता है?
3. अमरेश्वर के कंठ से ही नर्मदा निकली है– यह पंक्ति किस संदर्भ में कही गई है?
4. ''अमरकंटक ने अपनी आत्मा से नर्मदा को जन्म दिया है'' पाठ के अनुसार स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए –

   (क) दूर से दृष्टि पड़ती है कि कोई रजत धार आकाश से झर रही है। चारों तरफ हरा–भरा वानस्पतिक संसार है, एक तरफ अपनी अचलता और विश्वास में समृद्ध है, ऊपर आसमान में बादलों की छिया छितौली और धमा चौकड़ी मची है।

   (ख) अमरकंठी नर्मदा का यह क्षेत्र देवों और मनुजों, मिथकों और लोक कथाओं, ऋषियों और वर्तमान के रचनाकारों को अपने संदर्भों में समाए हुए है। कालिदास ने इसे आम्रकूट कहा है।

6. नर्मदा सूख जायेगी तो हम लोग कैसे बच सकेंगे? वनवासी स्त्री द्वारा ये बात क्यों कही गयी?
7. टिप्पणी लिखिए–

   (क) सोनमुड़ा (ख) आम्रकूट (ग) मेकल (घ) माई की बगिया

पाठ से आगे

1. नर्मदा नदी लोगों के जीवन को कैसे खुशहाल बनाती है?
2. ''नर्मदा का उद्‌गम : अमरकंटक'' पाठ में वर्णित नैसर्गिक सौंदर्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
3. ''अमरकंटक ने नर्मदा को जन्म देकर भारत को वरदान दिया है।'' ऐसा क्यों कहा गया है? विचार लिखिए।
4. अविवेकपूर्ण व अंधाधुंध खनन से अमरकंटक क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यावरण को किस प्रकार का नुकसान हो रहा है? जानकारी जुटाकर लिखिए?

DHGRG3

भाषा के बारे में

1. पाठ में कई जगह गुणवाचक विशेषणों का प्रयोग किया गया है–

   जैसे –बादल सरई के ऊँचे–ऊँचे पेड़ों की फुनगियों पर रहते अमरकंटक की समतल और रक्ताभ छवि से रूबरू होते आगे बढ़ते हैं।

   पंक्ति में 'ऊँचे–ऊँचे' शब्द पेड़ों का गुण बता रहा है तथा 'रक्ताभ' शब्द छवि की विशेषता बता रहा है। इस प्रकार पाठ में आए विशेषणों को ढूँढकर लिखिए (जो शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष आदि का बोध कराए, गुणवाचक विशेषण कहलाता है)।

2. किसी प्राकृतिक स्थल की विशेषताओं को बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

DHQHHQ

3. इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

   (क) अमरकंटक <u>तो</u> पहले <u>भी</u> जाना हुआ था।

   (ख) वह <u>भी</u> विरह सन्तप्त होकर अमरकंटक के उच्च शिखर से छलांग लगा लेता है।

   (ग) अमरेश्वर के कंठ से <u>ही</u> नर्मदा निकली है।

   उपर्युक्त तीनों वाक्यों में प्रयुक्त होनेवाले अव्यय **'तो'**, **'भी'** एवं **'ही'** शब्द वाक्य में जिन शब्दों के बाद लगते हैं उनके अर्थ में विशेष प्रकार का बल ला देते हैं। इन शब्दों को ''निपात'' कहा जाता है।

   'तो', **'भी'** एवं **'ही'** शब्दों का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य बनाइए और प्रत्येक के बारे में यह भी स्पष्ट कीजिए कि किन विशेष अर्थों में उनका प्रयोग होता है।

प्रायोजना कार्य

1. पाठ में शोण एवं नर्मदा की लोक कथा का उल्लेख है। ऐसी ही अन्य नदियों से संबंधित लोक कथाओं को पता कीजिए एवं अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए!

DHZIJD

पाठ – 1.3

बादल को घिरते देखा है

नागार्जुन

जीवन परिचय

हिन्दी और मैथिली के प्रमुख लेखक व कवि नागार्जुन का जन्म 30 जून 1911 को मधुबनी, बिहार के सतलखा गाँव में हुआ। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिंदी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ कीं। खेतिहर परिवेश में पले–बढ़े नागार्जुन की आरंभिक शिक्षा संस्कृत में हुई तथा आगे उन्होंने स्वाध्याय पद्धति से ही शिक्षा पूर्ण की। उन्होंने लगभग सभी विधाओं में लिखा। उन्होंने एक दर्जन कविता संग्रह, दो खण्ड काव्य तथा छः से अधिक उपन्यास लिखे। इनमें से कविता संग्रह– ***अपने खेत में, युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, रत्नगर्भ,*** *उपन्यास–* ***रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, कुंभीपाक*** *आदि मैथिली रचनाएँ–* ***चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ*** *(कविता संग्रह),* ***पारो, नवतुरिया*** *(उपन्यास) आदि प्रमुख रही हैं। इसके अलावा बाल साहित्य व बांग्ला रचनाएँ भी काफ़ी चर्चित हैं। 1965 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 5 नवम्बर 1998 को उनकी मृत्यु हो गई।*

अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

तुंग–हिमालय के कंधे पर
छोटी–बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल–नील सलिल में
समतल देशों से आ–आकर
पावस की ऊमस से आकुल

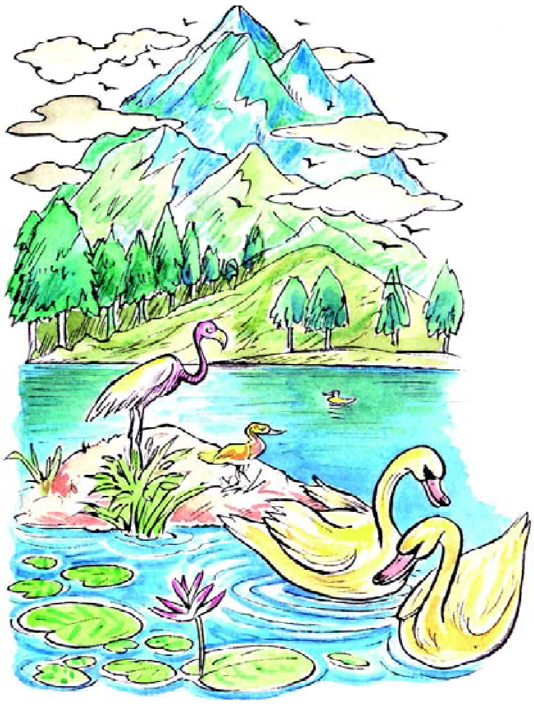

तिक्त–मधुर बिसतंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थीं
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक–दूसरे से विरहित हो
अलग–अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशाकाल के चिर–अभिशापित
बेबस उन चकवा–चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत–सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो–होकर
तरल–तरूण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

शब्दार्थ

अमल – निर्मल; **धवल** – श्वेत; **शिखर** – चोटी; **तुहिन** – ओस; **बालारूण** – ऊगता हुआ सूरज; **श्यामल** – कृष्ण वर्ण; **नील सलिल** – नीले रंग का पानी; **बिसतंतु** – कीड़े–मकोड़े; **मृदु** – कोमल; **विरहित** – विरह से पीड़ित; **अभिशापित** – जिसे शाप मिला हो; **क्रंदन** – दु:ख भरा रूदन; **दुर्गम** – जहाँ कठिनाई से पहुँचा जाए; **अलख** – जिसे देखा ना जा सके; **परिमल** – खुशबू, सुगंध।

अभ्यास

पाठ से

1. मानसरोवर के कमल को स्वर्णिम कमल कहने का क्या आशय है?
2. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के प्रकृति चित्रण को अपने शब्दों में लिखिए।
3. कवि चकवा–चकई द्वारा किन मनोभावों को कविता में बताना चाहते हैं?
4. कवि ने कस्तूरी मृग का उल्लेख किस संदर्भ में किया है?
5. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थी
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे

(ख) दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत–सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल

पाठ से आगे

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में ऊगते हुए सूर्य और उस समय के प्राकृतिक दृश्य का चित्रण हुआ है। उसी प्रकार अस्त होते सूर्य के संध्याकालीन दृश्य पर समूह में बैठकर चार–छ: पंक्तियों की कविता रचना कीजिए।

DXIAHN

2. यहाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की कविता 'सखि वसंत आया' का कुछ अंश दिया जा रहा है। बसंत ऋतु में प्रकृति किस प्रकार का रूप धारण करती है? पंक्तियों के आधार पर उसके सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय–वसना नववय–लतिका
मिली मधुर प्रिय–उर तरू–पतिका
मधुप–वृन्द बन्दी
पिक स्वर नभ सरसाया।
लता–मुकुल–हार–गन्ध–भार भर
वही पवन बंद मन्द मन्दतर
जागी नयनों में वन–
यौवन की माया।

3. कविता में प्रवासी पक्षियों का उल्लेख किया गया है। पता कीजिए मौसम के किस बदलाव के कारण प्रतिवर्ष प्रवासी पक्षी अनुकूल जलवायु के लिए दूर देश से आते हैं? साथ ही यह ज्ञात कीजिए कि भारत में प्रवासी पक्षी कहाँ–कहाँ से आते हैं, कितने समय तक ठहरते हैं और कब लौटते हैं?

भाषा विस्तार

1. अनिल, अनल जैसे युग्म शब्द, श्रुति समभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। ऐसे ही सुनने में समान परंतु भिन्न अर्थ वाले कुछ युग्म शब्द दिए जा रहे हैं :–

DXS6PB

अंश – हिस्सा	अभिराम – सुन्दर
अंस – कंधा	अविराम – लगातार
अपेक्षा – इच्छा	
उपेक्षा – निरादर	

आप भी ऐसे युग्म शब्द खोंजें एवं उसके अर्थ पता करें।

2. कविता में 'अमल', 'समतल', 'सुप्रभात', 'अभिशापित', 'दुर्गम', 'उन्मादक' आदि शब्द आये हैं।

(क) उपर्युक्त शब्दों में निहित उपसर्गों को अलग कीजिए यथा – अ + मल।

(ख) इन उपसर्गों के योग (मेल) से बने पाँच–पाँच अन्य शब्दों को लिखिए।

प्रायोजना–कार्य

1. विद्यालय के पुस्तकालय से प्रकृति–चित्रण की अन्य श्रेष्ठ कविताओं का संकलन कीजिए और कविताओं में निहित प्रकृति के सौंदर्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

2. माखन लाल चतुर्वेदी की कविता– 'दूबों के दरबार में' में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का बखूबी चित्रण हुआ है। इसे भी पढ़िये।

EA6F5V

क्या आकाश उतर आया है
दूबों के दरबार में
नीली भूमि हरी हो आई
इस किरणों के ज्वार में
क्या देखे तरूओं को उनके
फूल लाल अंगारे हैं,

वन के विज़न भिखारी ने
वसुधा में हाथ पसारे हैं
नक्शा उतर गया है, बेलों
की अलमस्त जवानी का
युद्ध ठना, मोती की लड़ियों से
दूबों के पानी का!

तुम न नृत्य कर उठो मयूरी
दूबों की हरियाली पर
हंस तरस खाएँ उस मुक्ता
बोने वाले माली पर
ऊँचाई यों फिसल पड़ी हैं
नीचाई के प्यार में
क्या आकाश उतर आया है
दूबों के दरबार में?

बाल विवाह निषेध अधिनियम

बाल विवाह पर रोक लगाने हेतु 1929 में एक अधिनियम पारित हुआ था जिसे 'शारदा एक्ट' के नाम से जाना जाता है। यह अधिनियम प्रभावी नहीं हुआ अतः 1978 में इसमें संशोधन किया गया, इसी संशोधित अधिनियम को 'शारदा बाल विवाह निरोधक अधिनियम के नाम से जाता है। 2006 में एक बार फिर पूर्व के अधिनियमों से अधिक प्रभावशील बाल विवाह निषेध अधिनियम बना जो 01 नवम्बर 2007 में लागू हुआ। यह अधिनियम बाल–विवाह को सख्ती से प्रतिबंधित करता है। इस अधिनियम के अनुसार विवाह के लिए लड़की की उम्र 18 वर्ष तथा लड़के की उम्र 21 वर्ष से कम न हो। नियम की अवहेलना होने की स्थिति में कठोर कार्यवाही का प्रावधान है। इतना ही नहीं बाल–विवाह होने की स्थिति में संबंधित (बच्चा/बच्ची) वयस्क होने के दो साल के अंदर अपनी इच्छा से अपने बाल–विवाह को अवैद्य घोषित कर सकता है, किन्तु यह कानून इस्लाम धर्मावलम्बियों पर लागू नहीं होता।

ऐसा मानना है कि बाल–विवाह किसी बच्चे को अच्छे स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा के अधिकार से वंचित करता है, साथ ही कम उम्र में विवाह से लड़के और लड़कियाँ दोनों पर शारीरिक बौद्धिक मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक प्रभाव पड़ता है, व्यक्तित्व का विकास सही ढ़ग से नहीं हो पाता। कम उम्र में विवाह के कारण लड़कियों को हिंसा, दुर्व्यवहार और उत्पीड़पन का सामना करना पड़ता है।